दैनिक
राष्ट्रीय प्रस्तावना
गाँव से गवर्नेन्स तक

5800 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल का बर्फीली चट्टान (आइसबर्ग) के दक्षिणी ध्रूव से टूटने का सम्भावित खतरा

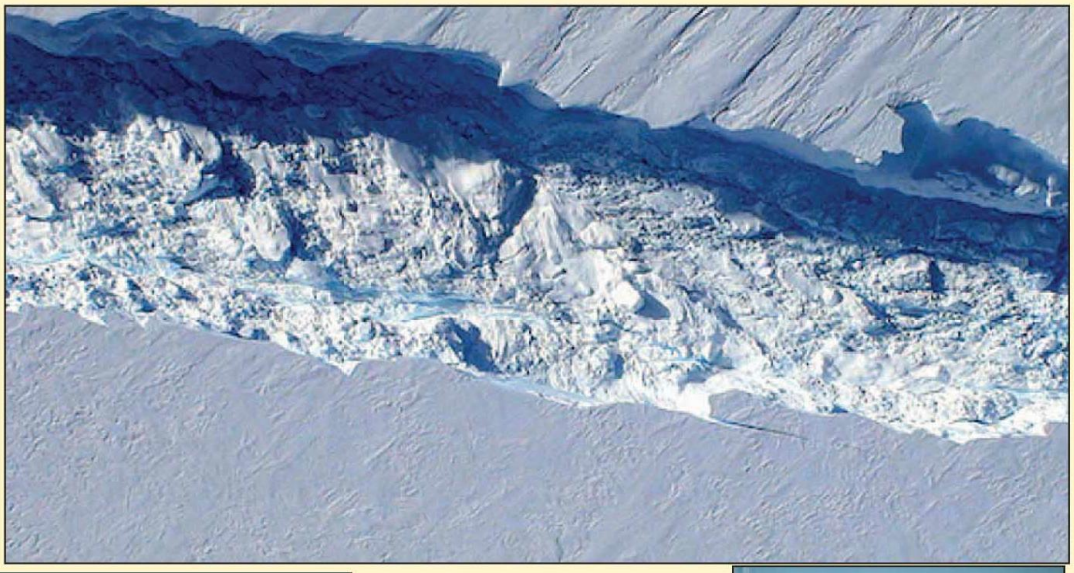

अभी दिनांक 10-12 जुलाई 2017 के बीच दक्षिणी ध्रूव के पश्चिमी छोर से एक आइसबर्ग जिसका क्षेत्रफल 5800 वर्ग-किलोमीटर था और अनुमानित मोटाई 350 मीटर है, टूटकर अलग होगया है द्य इस आइसबर्ग का वजन 1-खरब टन तथा इसकी अलग होकर समुद्र में चलने की रफ़्तार लगभग 325 किलोमीटर प्रतिघंटे की आंकी गयी है । इससे यह भी अनुमान लगाया जा रहा है कि यदि इस चट्टान की बर्फ पूर्णतः पिघल जाएगी तो समुद्र के जल-स्तर में लगभग 10 इंच की बढ़ोत्तरी हो जाएगी द्य यह भी अनुमान लगाया जा रहा है

प्रोफ़. भरत राज सिंह
महानिदेशक (तकनीकी)
स्कूल ऑफ़मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ

कि इससे समुद्री जहाजो के रास्ते में टकराने का भी बहुत बड़ा खतरा बना हुआ है और छोटे द्वीपों के डूबने से भी इंकार नहीं किया जा सकता है । इसका क्षेत्रफल, भारतवर्ष के गोआ से डेढ़ गुनाए दिल्ली शहर से 4 गुना और अमेरिका के न्ययॉर्क से 7-गुना के बराबर है। प्रोफ़0 भरत राज सिंह जो स्कूल ऑफ़ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ के महानिदेशक (तकनीकी) है, का कहना है कि इस टूटे आइसबर्ग के किसी अन्य द्वीप के साथ टक्कर होने पर एक तरफ जहा उसके जलप्लावन से डूबने का खतरा है वही दूसरी तरफ उस द्वीप के सभी जीव.जंतुओए पेड़-पौधे और विकास की सभी सुविधाओ के समाप्त होने से भी नाकारा नहीं जा सकता है । यह प्रक्रिया इतनी भयावह हो सकती है कि इसके बारे में सोचना मुस्किल है ।

प्रोफ़0 सिंह यह भी बताते हैं कि इस आधुनिक युग में, जब हम सभी चीजो को अपनी खोज से पूर्वानुमान लगा लेते है, तब भी विश्व के सभी जनमानस को कुछ विकसित देश और कुछ विकासशील देश क्यों गुमराह कर रहे है । किसको अब यह जानकारी नहीं है, कि विगत एक या डेढ़ शताब्दी मेंए पृथ्वी पर हुयी अप्रत्यासित जनसँख्या वृद्धि व आसामान्य विकास की दरे इसके मुख्य कारक हैं जो पृथ्वी से खनिजो, तेल भण्डार और कोयले का अनाप-सनाप दोहन से उत्पन्न किया गया । प्रकृति से भी तरह.तरह से छेड़-छाड़ की गयी जिसमें पेड़ो व जंगलो की कटान, वाहनों के अप्रत्यासित उपयोग और इंडस्ट्रीज का अंधाधुन्द बढ़ावा आदि ही वैश्विक तामपान के वृद्धि में मुख्यकारक पाए गए है । (किताब के पृष्ठ 16)

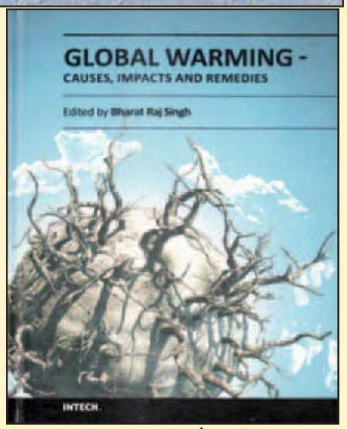

प्रोफ़ 0 सिंह ने बताया कि उक्त घटना की पूर्व में ही, उनके द्वारा उनकी किताब ग्लोबल वार्मिंग दृकाजेज, इम्पैक्ट एंड रेमेडीज, जो क्रोशिया में अप्रैल 2015 में प्रकाशित हुयी है, मे इस बात का उल्लेख किया गया था कि अंटार्तिका (दक्षिणी ध्रूव के पाईन)आइसबर्ग के पक्षिमी क्षेत्र से एक विशाल दरार नासा के सेट-लाइट के चित्र से देखि गयी है । इस पर नासा के वैज्ञानिको का मत था कि इस प्रकार की दरारे वर्फ के पुनर्जमाव से भर जाती हैं । परन्तु प्रोफ 0 सिंह ने, प्रोफ 0 रिग्नोट के बात का समर्थन करते हुए उल्लेख किया था कि वर्फ के वर्तमान गलने की दर को देखते हुए कुछ वर्षो या मात्र सौ वर्षो के अंतराल में ऐसे स्थानों के ग्लेशियर, इतिहास में कहानी का भाग बन जाएगे । हम इस समय ऐसी स्थिति से गुजर चुके है जिसे अपने पूर्व स्थान पर पुनः वापस पहुचाना असम्भव है । अतः इस स्थान की ग्लेशियर जहा दरारे पड़ चुकी है, का टूटना निश्चित है । जो घटना मात्र दो-वर्षो के अन्तराल पर घटित हो गयी और विश्व के किसी स्थान व समय में, किसी भयावह अथवा बड़ी दुर्घटना का कारण बन सकती है ।